2017-18

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

UGC Approved Jr.No.62759

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Jan. To March 2018
Issue-21, Vol-07

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

UGC Approved
Jr.No.62759

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

Editorial Board & Advisory Committee

1) Dr. Vikas Sudam Padalkar (Japan)
2) M.Saleem, Sialkot (Pakistan)
3) Dr. Momin Mujtaba (Saudi Arebia)
4) N.Nagendrakumar (Sri Lanka)
5) Dr. Wankhede Umakant (Maharashtra)
6) Dr. Basantani Vinita (Pune)
7) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
8) Jubraj Khamari (Orissa)
9) Krupa Sophia Livingston (Tamilnadu)
10) Dr. Wagh Anand (Aurangabad)
11) Dr. Ambhore Shankar (Jalna)
12) Dr. Ashish Kumar (Delhi)
13) Prof.Surwade Yogesh (Satara)
14) Dr. Patil Deepak (Dhule)
15) Dr. Singh Rajeshkumar (Lucknow)
16) Tadvi Ajij (Jalgaon)
17) Dr.Patwari Vidya (Jalna)
18) Dr.Varma Anju (Gangatok)
19) Dr.Padwal Promod (Waranasi)
20) Dr.Lokhande Nilendra (Mumbai)
21) Dr.Narendra Pathak (Lucknow)
22) Dr.Bhairulal Yadav (West Bangal)
23) Dr.M.M.Joshi, (Nainital)
24) Dr.Sushma Yadav (Delhi)
25) Dr.Seema Sharma (Indor)
26) Dr. Choudhari N.D. (Kada)
27) Dr. Yallawad Rajkumar (Parli v.)
28) Dr. Yerande V. L.(Nilanga)
29) Dr. Awasthi Sudarshan (Parli v.)
30) Dr. Prema Chopde (Nagpur)
31) Dr Watankar Jayshree
32) Dr. Saini Abhilasha,
33) Dr. Vidya Gulbhile (M.S.)
34) Dr. Kewat Ravindra (Chandrapur)
35) Dr. Pandey Piyush (Delhi)
36) Dr. Suresh Babu (Hydarabad)
37) Dr. Patel Brijesh (Gujrat)
38) Dr. Trivedi Sunil (Gujrat)
39) Dr. Sarda Priti (Hydarabad)
40) Dr. Nema Deepak (M.P.)
41) Dr. Shukla Neeraj (U.P.)
42) Dr. Namdev Madumati (M.P.)
43) Dr. Kachare S.V. (Parli-v)
44) Dr. Singh Komal (Lucknow)
45) Dr. Pawar Vijay (Mumbai)
46) Dr. Chaudhari Ramakant (Jalg

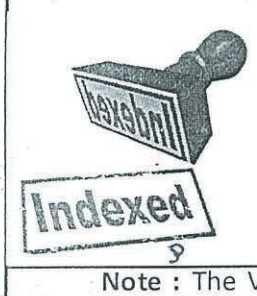

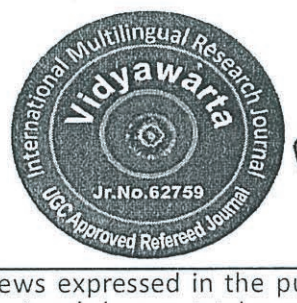

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

http://www.printingarea.blogspot.com

37) जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याई नई नाटक का मूल्यांकन
डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे,उदगीर, जि—लातुर || 156

38) तीन तलाक:एक अवलोकन
डौली, मेरठ || 160

39) ग्लोबल संस्कृति की आपदा
प्रा. डॉ. गायकवाड साहेबराव,, जिला अहमदनगर (महाराष्ट्र)। || 164

40) जयप्रकाश नारायण और समाजवाद
सचिन कुमार, मेरठ || 166

41) शिशु मृत्यू दर एवं उसके प्रभावक तत्व
डॉ. महिमाती सालेन टोप्पो, अभनपुर (छ.ग.) || 169

42) पुरुष रचनाकार की दृष्टि में आधुनिक नारी का स्वरूप
डॉ. सुरेश ए., एर्णाकुलम, केरल || 173

43) हिंदी के विकास में कर्नाटक का योगदान
डॉ. मिर्झा असद बेग रुस्तुम बेग, बीड || 177

44) हिन्द महासागर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
डॉ.राम प्रसाद यादव, गोरखपुर || 179

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

43

हिंदी के विकास में कर्नाटक का योगदान

डॉ. मिर्झा असद बेग रुस्तुम बेग
हिंदी विभाग अध्यक्ष,
मिल्लीया कला, विज्ञान एवं व्यवस्थापन शास्त्र महाविद्यालय बीड

आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है। विज्ञान विश्व के मानव-जीवन पर काफी मात्रा में हावी होता जा रहा है। इसलिए भावात्मक या रागात्मक लेखन के साथ-साथ अधिकाधिक मात्र में वैज्ञानिक विषयों को लेकर ग्रंथ-निर्माण-कार्य इन दिनों प्रत्येक भारतीय भाषा में द्रुतगति से हो रहा है। जब से कर्नाटक का १-१-१९६ से एकीकरण हुआ तब से यहाँ एक नया जोश हर एक कार्य-क्षेत्र में पैदा हुआ है। कन्नड साहित्य का ग्रंथ-निर्माण कार्य (सर्जनात्मक एवं विचारात्मक) विपुल मात्र में चल रहा है। इसके प्रधान संगठित केंद्र चार हैं।

(१) मैसूर विश्वविद्यालय, (२) कर्नाटक विश्वविद्यालय, (३) बैंगलोर विश्वविद्यालय और (४) कन्नड साहित्य परिषद्।

इनमें केवल मैसूर विश्वविद्यालय की तरफ से साहित्य-सुमन के नाम से पी.यू. सी. के दो पाठ्य-ग्रंथों के संकलन-संपादन-प्रकाशन के अलावा कोई हिंदी पुस्तक नहीं निकली है।

सर्जनात्मक कार्य दो प्रकार का है: (१) हिंदी में अनुवाद, (२) मौलिक हिंदी लेखन। इन दोनों क्षेत्रों में कर्नाटक पिछड़ा नहीं है।

सर्व प्रथम श्री भारद्वाज ने तुलसीरामायण के बालकाण्ड एवं अयोध्याकाण्ड का कन्नड में अनुवाद प्रस्तुत करके इस महान ग्रंथ की तरफ लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। हाँ, हिंदी में भी कुछ पढ़ने योग्य साहित्य है- यह बात विश्वविद्यालयों के अधिकारियों को देर से सूझी। १९५९ में मैसूर विश्वविद्यालय में हिंदी में एम.ए. की पढ़ाई शुरू हुई। कर्नाटक विश्वविद्यालय में दो वर्ष बाद और बैंगलोर विश्वविद्यालय में हिंदी में एम.ए. पढ़ाई की व्यवस्था हुई।

उपन्यास

हिंदी में कन्नड से कई उपन्यास आए हैं। सर्वप्रथम स्थान मैं श्री वी.एल. बैरप्पा जी के वंशवृक्ष को देता हूँ। इसके लेखक उत्कृष्ट कन्नड उपन्यासकार हैं। अनुवादक है श्री वासु पुत्तन। अनुवाद उत्तम, भावपूर्ण एवं शुद्ध त्रुटिरहित भाषा में प्रस्तुत किया गया है। ब्रह्मप्पालिखित दानचिंतामणि नामक उपन्यास का हिंदी अनुवाद श्री एम. के. भारती रमणाचार्य जी ने किया है। यह अनुवाद पाठनीय है। श्री. आर.वी. अय्यर लिखित शांतला (जैन रानी) का हिंदी अनुवाद डॉ. हिरण्मय जी ने किया है। इसकी भाषा कन्नड-शैली की अनुगामिनी है। श्री काव्यतीर्थ ने प्रस्तुत किया है। यह अनुवाद अनुवाद करनेवालों के लिए हिंदी भाषा-शैली की दृष्टि से आदर्श प्रस्तुत करता है। श्री त.र. सुब्बाराव विरचित हंसगीत का श्री प्रताप सुधारक ने अनुवाद प्रस्तुत किया है।

वंशवृक्ष और संध्याराग के अतिरिक्त अन्य उपन्यास कर्नाटक के इतिहास से संबद्ध हैं। मैं ऐसे उपन्यासों को हिंदी में प्रस्तुत करना आवश्यक मानता हूँ, अन्यथा कर्नाटक प्रदेश की ऐतिहासिक गरिमा अखिल भारतीय जनता को नहीं उपलब्ध होगी। फिर मिट्टी की ओर और मरने पर श्री शिवराम कांत के उपन्यास हैं। अनुवादक हैं : श्री कुमटेकर और श्री गुरूनाथ जोशी।

डॉ. श्री एम.एस. कृष्णमूर्ति ने अपराजिता - एक मौलिक हिंदी उपन्यास प्रस्तुत करके इस क्षेत्र में एक नया युग प्रस्तुत किया है। आपको इस मौलिक उपन्यास पर केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली, का प्राम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। यह उपन्यास कन्नड-काव्य सांगत्य कुमारराम पर आधारित है।

कविता

कविता का क्षेत्र काफी उर्वर रहा है। श्री सनदी, श्री चंद्रकांत कुसनूरकर और उत्तर कर्नाटक के कई मित्र हिंदी में काव्य-रचना (मुक्तक) कर रहे हैं। सनदी और कुसनूरकर के दो कविता-संग्रह भी देखने में आए। वैसे मौलिक कविताएँ रचना कष्टसाध्य ही है।

कन्नड कविता का पद्यानुवाद भारतीय कविता १९५३ डॉ. हिरण्मय द्वारा प्रस्तुत किया गया है कविता का अनुवाद अनुवाद मात्र है। मूल कविता का भाव पूर्ण रूप से अनुवाद में नहीं उतर पाया है। श्री कुवेपुं को हाल में ज्ञानपीठ पुरस्कार उनकी रचना रामायण दर्शन पर प्राप्त हुआ था। श्री. द.रा. बेंद्रे को इस वर्ष नाकुतांति (चार तार) नामक मौलिक मुक्तक संग्रह पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। उसका हिंदी अनुवाद अंशतः धर्मयुग के २४-११-७४ वाले अंक में देखने को मिला। किंतु अनुवाद पढ़कर तृप्ति नहीं हुई। यदि पद्यानुवाद पढ़कर मूल पढ़ने की प्रेरणा हो तो समझिए अनुवादक का कार्य सफल रहा है।

नाटक :

कर्नाटक का रंगमंच अत्यंत प्रसिद्ध है। इस दिशा में अनुवादकों को काफी सफलता प्राप्त हुई है। नागरिक (मौलिक लेखक : एम.आर. श्रीनिवासमूर्ति-अनुवादक : श्री. रं.रा. दिवाकर) का हिंदीकरण उत्तम है। यह अनुवाद-कार्य जेल में संपन्न हुआ था। श्री. टी.पी. कैलासम् के बड्वाल इल्लद बडायि (ठन-ठन गोपाल अंदर, जंटलमैन बाहर) का हिंदी अनुवाद डॉ. बेंकटेशिकाचार जी, डायरेक्टर डिपार्टमेंट आफ

अर्काइव्स, निदेशक, कर्नाटक राज्यीय लेखागार, बैंगलोर - १ के भाई शेलेश ने प्रस्तुत किया है। इन्हींने श्री जी.पी. राजरत्नम् का एंड कुड्करत्न (पियक्कड़ रत्न) का भी हिंदी अनुवाद किया है। श्रीरंग विरचित जनमेजय दिल्ली में हिंदी में मंचित हुआ। इसमें काफी सफलता मिली। हिंदी में प्रस्तुतकर्ता हैं श्री.बी.वी. करंत। इधर कन्नड के प्रसिद्ध नाटककार गिरीश कर्नाड का तुगलक भी दिल्ली में मंचित किया गया। श्री. बी.वी. कारंत ने इसका हिंदीकरण किया था। श्री के.वी. पुट्टप्पा का काव्य नाटक जलगार (मेहतर) का हिंदी अनुवाद श्री प्रताप सुधाकर ने सफलता से प्रस्तुत किया है। अनुवाद की भाषा काफी चुस्त है। कुवेंपु के रक्ताक्षी नाटक का डॉ. हिरण्मय जी ने अनुवाद किया है।

अन्य रचनाएं :

अन्य रचनाओं में से वैचारिक ग्रंथ मुख्य हैं। इस क्षेत्र में हमारे लेखकों को बेशक कामयाबी मिली है। नागरी प्रचारिणी पत्रिका के हीरक जयंती अंक (पृ. ३४२-३६८) में डॉ. हिरण्मय जी ने आधुनिक कन्नड साहित्य का सिहाव लोकन प्रस्तुत किया है। इसके अतीरिक्त आपका शोध-प्रबंध हिंदी और कन्नड में भक्ति-आंदोलन के तुलनात्मक अध्ययन (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा : प्रथम संस्करण १९५९, पृ. ३९०) में तद्विषयक शोधार्थियों के उपयोगार्थ काफी सामग्री उपलब्ध है। इस पुस्तक के एक उद्धरण नीचे दिया जाता है:

"निंदक नियरे राखिये आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना निर्मल करे सुभाय।"[१]

"यह एक बड़ा मनोरंजक तथ्य है कि भक्तों की वाणी देश-काल की सीमा को पार कर सर्वत्र समान रूप से प्रकट हुई है। महात्मा पुरंदरदास ने निंदकों का होना बड़ा लाभकरी बताया है। उसके एक सुंदर पद का भावार्थ इस प्रकार है:"

"निंदकों का होना आवश्यक है। जिस प्रकार सूअर के होने से मुहल्ला साफ रहता है उसी प्रकार हमारे रोज़ के पापरूपी मल को निंदक साफ करते जाते हैं और जो लोग हमारी स्तुति करते हैं वे हमारे पुण्य को लेकर चले जाते हैं। इष्ट को प्रदान करनेवाले हे कृष्ण, मैं हाथ जोड़कर यही वर मांगता हूँ कि दुष्ट लोग चिरकाल तक जीवित रहें।"[२]

डॉ. मे. राजेश्वरय्या ने उत्तर भारत की साहित्यकृतियों में वर्णित विरहिणी उर्मिला के साथ दक्षिण भारत के खासकर कन्नड-काव्यों में वर्णित साधिका या तपस्विनी उर्मिला की तुलना करके दोनों प्रदेश के कवियों की अंतर्दृष्टियों में अंतर स्पष्ट किया है।

डॉ. एम.एस. कृष्णमुर्ति ने कुवेंपु और बेंद्रे पर दो परिचायत्मक ग्रंथ लिखे हैं जो राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, से प्रकाशित हुए हैं।

श्रवणबेलगोल, बेलूर व श्रीरंगपट्टण हलेयबीड पर मार्गदर्शिकाएँ हिंदी में मैसूर राज्य के प्रदेश-सरकारी प्राच्य शोध विभाग की ओर से निकली हैं।

श्री एस. रामचंद्र (धारवाड़) ने शारदादेवी पर अत्यंत सुंदर हिंदी जीवनी प्रस्तुत की है जो रामकृष्णाश्रम, काशी, की ओर से प्रकाशित है। इसे मैं अत्यंत उच्चकोटि की जीवनी मानता हूँ।

अंतरात्मा से श्री. रं.रा. दिवाकर जी की एक अपूर्व कृति है। (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)। यह गद्य-काव्य है। इसमें साठ गद्य-काव्य-मुक्तक हैं। एक नमूना देखें : "ओह, अब मै समझ गया। तुम्हें छोड़ अपना समझने से, अपना लेने से इस तरह बोझ-सा प्रतीत हुआ मुझे यह संसार! रूप कितना भी सुंदर रहे, कितना भी अनगिनत सौभाग्य रहे तो क्या हुआ क्या अपना प्यारा पति आँखें से ओझल होते ही लावण्यवती की उमंग तथा लावण्य रहेगा नमक बिना भोजन कैसे रूचेगा रस-रहित वाणी कैसी लगेगी इसी तरह है मेरी जिंदगी तुम्हारे बिना। प्रभु, अब ऐसा अनुग्रह करो कि मैं सब कुछ तुम्हारा ही मानूं और हमेशा तुम्हारे साथ रह सकूं अंतरात्मा।"[३]

प्रभु के निकट तक अंतरात्मा में पहुंचकर कही हुई यह वाणी है। अनुभावी की रहस्यमय उक्ति है।

श्री दिवाकर जी का वचनशास्त्रसार हिंदी में तद्विषय एक मात्र ग्रंथ है।

मैसूर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से निकलनेवाली हिंदी वार्षिक शोधपत्रिका मानसी ऐसे ही वैचारिक लेख प्रकाशित करके मौलिक शोधपूर्ण एवं विचारपूर्ण लेख लिखनेवालों को प्रोत्साहित करती हैं।

निष्कर्ष :

कर्नाटक की जन-संख्या अब काफी बड गयी है। उसका बीस प्रतिशत भाग हिंदी समझता है। इसका हिंदी के बिकास में काफी मात्रा में योगदान अपेक्षित है। जब भविष्य में शुक्ल जी जैसे विद्वान् हिंदी साहित्य का इतिहास लिखेंगे, अंतरात्मा से का उल्लेख अवश्य ही करेंगे। ऐसे-ऐसे ग्रंथ निकलेंगे जिनके बारे में यह कहना मुश्किल होगा कि इनके लेखक हिंदी भाषाभाषी नहीं है। सर्जनात्मक साहित्य की उत्तमता इन दिनों दो दृष्टियों से आंकी जाती है - (१) मानवतावादी दृष्टि, (२) मन:शास्त्र की दृष्टि। यदि पठनीय हो तो अनुवाद भी मौलिक ग्रंथों के समान मूल्यवान् ही होगा। वैचारिक साहित्य की रचना में कर्नाटक का हिंदी लेखक किसी भी हिंदी लेखक से कम नहीं है, न कभी रहा, न रहेगा।

इस तरह से कर्नाटक का हिंदी की प्रगति एवं विकास में काफी योगदान रहा है। यह योगदान भविष्य में मात्रा एवं गुण दोनों दृष्टियों से निस्संदेह बढ़ेगा, बढ़ता जाएगा।

संदर्भ :

१) कबीर वचनावली पृ. १३९
२) वचनशास्त्रसार पृ. १७२
३) अंतरात्मा से - रं.रा. दिवाकर